IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्वयं सहायता समूहों के जुड़ी महिलाओं की आर्थिकी : राजस्थान के अनुसूचित क्षेत्रों का एक अध्ययन

डॉ. देवा राम
(अनुसंधान पर्यवेक्षक)
सह - आचार्य
डॉ. भीमराव अम्बेडकर
राजकीय स्नातकोत्तर कॉलेज, निम्बाहेड़ा

अनिता
(शोधार्थिनी)
अर्थशास्त्र विभाग
सामाजिक विज्ञान संकाय
मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय
उदयपुर (राज.)

शोध सारांश:

इस शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र में स्वयं सहायता समूहों (SHG) से जुड़ी महिलाओं की आर्थिकी का अध्ययन करना है, जिसके अन्तर्गत स्वयं सहायता समूहों से जुडने से पूर्व एवं पश्चात् उत्तरदाताओं की आय, व्यय और बचत के प्रतिरूप का तुलनात्मक अध्ययन सम्मिलित है। प्रस्तुत शोध कार्य प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है। ये आंकड़े शोधार्थिनी द्वारा दक्षिणी राजस्थान के चार आदिवासी जिलों यथा- बाँसवाड़ा, डुंगरपुर, उदयपुर और प्रतापगढ़ से एकत्र किए गए हैं। यह आँकड़े प्रत्येक जिले से 15 उत्तरदाताओं का चयन करते हुए अध्ययन क्षेत्र से कुल 60 उत्तरदाताओं से व्यक्तिगत साक्षात्कार और अनुसूचि भरवाकर एकत्र किए गए हैं। सभी उत्तरदाता स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाएं हैं। परिकल्पनाओं की सत्यता की जांच के लिए शोधार्थिनी द्वारा 'पेयर टू सैंपल टी टेस्ट' (Paired Two Sample T-Test) का उपयोग किया गया है। उपर्युक्त शोध कार्य से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में स्वयं सहायता समूह से जुडने के पश्चात् महिलाओं की मासिक आय, मासिक व्यय और मासिक बचत में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

शब्द कुंजी:

स्वयं सहायता समूह, महिला सशक्तिकरण, वित्तीय समावेशन और महिला विकास।

शोध परिचय:

स्वयं सहायता समूह (Self Help Group) समान आयु वर्ग के कुछ ऐसे लोगों का एक समूह होता है, जो किसी विशेष उद्देश्य को पूरा करने के लिए बनाये जाते है। ये छोटे-छोटे समूह परस्पर एक-दूसरे की सहायता के लिए बनाये जाते है। जैसाकि इसके नाम से स्पष्ट है, समूह के सदस्य किसी अन्य के ऊपर निर्भर नहीं रहते हैं, अपितु ये अपनी सहायता स्वयं करते है। इस प्रकार के समूह में 10 से 20 सदस्य होते है, ये सभी सदस्य स्वेच्छा से इसमें शामिल हो सकते है। अध्ययन क्षेत्र में भी ऐसे अनेक समूह क्रियाशील है। इन समूह में महिलाओं की भी सक्रियता देखने को मिलती है। इस शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र में स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं की आर्थिकी का अध्ययन करना है, जिसके अन्तर्गत स्वयं सहायता समूहों से जुडने से पूर्व एवं पश्चात् महिलाओं की मासिक आय, मासिक व्यय और मासिक बचत का तुलनात्मक अध्ययन सम्मिलित है। इस शोध कार्य हेतु शोधार्थिनी द्वारा निम्न परिकल्पनाओं का निर्धारण किया है-

शून्य परिकल्पना (H_0)

1. स्वयं सहायता समूह से जुडने के पश्चात् महिलाओं की मासिक आय में कोई वृद्धि नहीं हुई है।
2. स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के पश्चात् महिलाओं के मासिक व्यय में कोई वृद्धि नहीं हुई है।
3. स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के पश्चात् महिलाओं की मासिक बचत में कोई वृद्धि नहीं हुई है।

वैकल्पिक परिकल्पना (H_a)

1. स्वयं सहायता समूह से जुडने के पश्चात् महिलाओं की मासिक आय में सकारात्मक वृद्धि हुई है।
2. स्वयं सहायता समूह से जुडने के पश्चात् महिलाओं के मासिक व्यय में सकारात्मक वृद्धि हुई है।
3. स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के पश्चात् महिलाओं की मासिक बचत में सकारात्मक वृद्धि हुई है

शोध प्रविधि:

प्रस्तुत शोध कार्य प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है। ये आंकड़े शोधार्थिनी द्वारा दक्षिणी राजस्थान के चार आदिवासी जिलों यथा- बाँसवाड़ा, डुंगरपुर, उदयपुर और प्रतापगढ़ से एकत्र किए गए हैं। प्रत्येक जिले से 15 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है, इस प्रकार का अध्ययन क्षेत्र से कुल 60 उत्तरदाताओं से व्यक्तिगत साक्षात्कार और अनुसूचित

भरवाकर यह आंकड़े एकत्र किए गए हैं। सभी उत्तरदाता स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाएं हैं। परिकल्पनाओं की सत्यता की जांच के लिए शोधार्थिनी द्वारा 'युग्मित द्वि चर टी परीक्षण' (Paired Two Sample T-Test) का उपयोग किया गया है। जिसका सूत्र निम्नलिखित है।

$$t = \frac{\sum d}{\sqrt{\frac{n(\sum d^2) - (\sum d)^2}{n-1}}}$$

Where-

d= difference per paired value

n= number of samples

शोध परिणाम:

अध्ययन क्षेत्र में स्वयं सहायता समूह से जुड़ने से पूर्व 7 (11.67%) उत्तरदाताओं की मासिक आय 1000 रुपये से कम थी, वहीं 24 (40%) उत्तरदाताओं की औसत मासिक आय 1000 से 2000 रुपये के मध्य, 13 (21.67%) उत्तरदाताओं की औसत मासिक आय 2000 से 3000 रुपये के मध्य, 12 (20%) उत्तरदाताओं की औसत मासिक आय 3000 से 4000 रुपये के मध्य, 04 (6.67%) उत्तरदाताओं की औसत मासिक 4000 से 5000 रुपये के मध्य थी।

इसी प्रकार यदि अध्ययन क्षेत्र में स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के पश्चात् महिलाओं की आवश्यक मासिक आय पर दृष्टि डालें तो स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में 02 (3.33%) उत्तरदाताओं की औसत मासिक आय 1000 रुपये से कम थी।, 3 (5%) उत्तरदाताओं की औसत मासिक आय 1000 से 2000 रुपये के मध्य, 13 (21.67%) महिलाओं की मासिक आय 2000 से 3000 रुपये के मध्य, 24 (40%) महिलाओं की मासिक आय 3000 से 4000 रुपये के मध्य, 13 (21.67%) उत्तरदाताओं की औसत मासिक आय 4000 से 5000 रुपये के मध्य और 5 (8.33%) महिलाओं की औसत मासिक आय 5000 से 6000 रुपये के मध्य है। इस प्रकार स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के पश्चात् उत्तरदाताओं की औसत मासिक आय के स्तर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। (तालिका-1 व 2)

तालिका 1 : समूह से जुड़ने से पूर्व उत्तरदाताओं स्वयं की मासिक आय

आय	बाँसवाड़ा	डूंगरपुर	प्रतापगढ़	उदयपुर	अध्ययन क्षेत्र
0-1000	3	2	1	1	7
	20.00	13.33	6.67	6.67	11.67
1000-2000	8	7	6	3	24
	53.33	46.67	40	20	40.00
2000-3000	2	3	3	5	13
	13.33	20.00	20.00	33.33	21.67
3000-4000	1	2	4	5	12
	6.67	13.33	26.67	33.33	20.00
4000-5000	1	1	1	1	4
	6.67	6.67	6.67	6.67	6.67
कुल	15	15	15	15	60

स्रोत: क्षेत्रीय सर्वेक्षण

तालिका 2 : समूह से जुड़ने से पश्चात् उत्तरदाताओं स्वयं की मासिक आय

आय	बाँसवाड़ा	डूंगरपुर	प्रतापगढ़	उदयपुर	अध्ययन क्षेत्र
0-1000	1	1	0	0	2
	6.67	6.67	0.00	0.00	3.33
1000-2000	2	1	0	0	3
	13.33	6.67	0.00	0.00	5.00
2000-3000	4	4	3	2	13
	26.67	26.67	20.00	13.33	21.67
3000-4000	5	6	6	7	24
	33.33	40	40	46.67	40.00
4000-5000	2	2	4	5	13
	13.33	13.33	26.67	33.33	21.67
5000-6000	1	1	2	1	5
	6.67	6.67	13.33	6.67	8.33
कुल	15	15	15	15	60

स्रोत: क्षेत्रीय सर्वेक्षण

स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के पूर्व 13 (21.67%) उत्तरदाताओं का औसत मासिक व्यय 1000 रुपये से कम था, वहीं 27 (45.00%) उत्तरदाताओं का औसत मासिक व्यय में 1000 से 2000 रुपये के मध्य, 12 (20.00%) उत्तरदाताओं का औसत मासिक व्यय 2000 से 3000 रुपये के मध्य और 8 (13.33%) उत्तरदाताओं का औसत मासिक व्यय 3000 से 4000 रुपये के मध्य था।

इसी प्रकार स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के पश्चात् 1 (1.67%) उत्तरदाताओं का औसत मासिक व्यय 1000 रुपये से कम था, वहीं 16 (26.67%) उत्तरदाताओं का औसत मासिक व्यय 1000 से 2000 रुपये के मध्य, 30 (50.00%) उत्तरदाताओं का औसत मासिक व्यय 2000 से 3000 रुपये के मध्य, 8 (13.33%) उत्तरदाताओं का औसत

मासिक व्यय 3000 से 4000 रुपये के मध्य और 05 (8.83%) उत्तरदाताओं का औसत मासिक व्यय 4000 से 5000 रुपये के मध्य है। इस प्रकार स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के पश्चात् उत्तरदाताओं के औसत मासिक व्यय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। (तालिका 3 एवं 4)

तालिका 3 : समूह से जुड़ने से पूर्व उत्तरदाताओं स्वयं की मासिक व्यय

व्यय	बाँसवाड़ा	डूंगरपुर	प्रतापगढ़	उदयपुर	अध्ययन क्षेत्र
0-1000	4	4	3	2	13
	26.67	26.67	20.00	13.33	21.67
1000-2000	8	7	6	6	27
	53.33	46.67	40.00	40.00	45.00
2000-3000	2	3	3	4	12
	13.33	20.00	20.00	26.67	20.00
3000-4000	1	1	3	3	8
	6.67	6.67	20.00	20.00	13.33
कुल	15	15	15	15	60

स्रोत: क्षेत्रीय सर्वेक्षण

तालिका 4 : समूह से जुड़ने से पश्चात् उत्तरदाताओं का स्वयं का मासिक व्यय

व्यय	बाँसवाड़ा	डूंगरपुर	प्रतापगढ़	उदयपुर	अध्ययन क्षेत्र
	0	1	0	0	1
0-1000	0.00	6.67	0.00	0.00	1.67
	5	4	4	3	16
1000-2000	33.33	26.67	26.67	20.00	26.67
	8	7	8	7	30
2000-3000	53.33	46.67	53.33	46.67	50.00
	2	2	1	3	8
3000-4000	13.33	13.33	6.67	20.00	13.33
	0	1	2	2	5
4000-5000	0.00	6.67	13.33	13.33	8.33
कुल	15	15	15	15	60

स्रोत: क्षेत्रीय सर्वेक्षण

अध्ययन क्षेत्र में स्वयं सहायता समूह से जुड़ने से पूर्व 45 (75.00%) उत्तरदाताओं की औसत मासिक बचत 1000 रुपये से कम थी, वहीं 11 (18.33%) उत्तरदाताओं की औसत मासिक बचत 1000 से 2000 रुपये के मध्य और 04 (6.67%) उत्तरदाताओं की औसत मासिक बचत 2000 से 3000 रुपये के मध्य थी।

इसके विपरीत अध्ययन क्षेत्र में स्वयं सहायता समूह में सम्मिलित होने के पश्चात् 8 (13.33%) उत्तरदाताओं की औसत मासिक बचत 1000 रुपये से कम थी, वहीं, 30 (50.00%) उत्तरदाताओं की औसत मासिक बचत 1000 से

2000 रुपये के मध्य, 14 (23.33%) उत्तरदाताओं की औसत मासिक बचत 2000 से 3000 रुपये के मध्य, और 8 (13.33%) उत्तरदाताओं की औसत मासिक बचत 3000 से 4000 रुपये के मध्य है। अतः स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में स्वयं सहायता समूहों से जुड़ने के पश्चात महिलाओं की बचत में पर्याप्त वृद्धि हुई है।

तालिका 5 : समूह में शामिल होने से पहले स्वयं की मासिक बचत

बचत	बाँसवाड़ा	डूंगरपुर	प्रतापगढ़	उदयपुर	अध्ययन क्षेत्र
0-1000	12	11	12	10	45
	80.00	73.33	80.00	66.67	75.00
1000-2000	2	2	3	4	11
	13.33	13.33	20.00	26.67	18.33
2000-3000	1	2	0	1	4
	6.67	13.33	0.00	6.67	6.67
कुल	15	15	15	15	60

स्रोत: क्षेत्रीय सर्वेक्षण

तालिका 6 : समूह में शामिल होने के पश्चात् स्वयं की मासिक बचत

बचत	बाँसवाड़ा	डूंगरपुर	प्रतापगढ़	उदयपुर	अध्ययन क्षेत्र
0-1000	3	2	2	1	8
	20.00	13.33	13.33	6.67	13.33
1000-2000	8	9	7	6	30
	53.33	60.00	46.67	40.00	50.00
2000-3000	3	2	4	5	14
	20.00	13.33	26.67	33.33	23.33
3000-4000	1	2	2	3	8
	6.67	13.33	13.33	20.00	13.33
कुल	15	15	15	15	60

स्रोत: क्षेत्रीय सर्वेक्षण

तालिका 7 : परिकल्पनाओं की सत्यता की जाँच हेतु चरों का निर्धारण

चर	विवरण	परिकल्पित t का मूल्य
X1	स्वयं सहायता समूह से जुडने से पूर्व 2000 रुपये से अधिक मासिक आय	0.029152
Y1	स्वयं सहायता समूह से जुडने के पश्चात् 2000 रुपये से अधिक मासिक आय	
X2	स्वयं सहायता समूह से जुडने से पूर्व 2000 रुपये से अधिक मासिक व्यय	0.02844
Y2	स्वयं सहायता समूह से जुडने के पश्चात् 2000 रुपये से अधिक मासिक व्यय	
X3	स्वयं सहायता समूह से जुडने से पूर्व 1000 रुपये से अधिक मासिक बचत	0.02804
Y3	स्वयं सहायता समूह से जुडने के पश्चात् 1000 रुपये से अधिक मासिक बचत	

स्रोत: स्वयं कि गणना

तालिका संख्या 7 में शोध परिकल्पनाओं की सत्यता की जांच के लिए चरों का निर्धारण किया गया है। X1 और Y1 चरों के मध्य 'टी टेस्ट' की गणना करने पर 'टी' का परिकल्पित मान 0.029151 है, जो 0.05 से कम है, अत: शोधार्थिनी की शून्य परिकल्पना 1 असत्य सिद्ध होती है, एवं वैकल्पिक परिकल्पना एक स्वीकार होती है। इससे स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूह से जुडने के पश्चात् उत्तरदाताओं की आय में सकारात्मक परिवर्तन हुआ है।

X2 और Y2 चरों के मध्य 'टी टेस्ट' की गणना करने पर 'टी' का परिकल्पित मान 0.02844 है, जो 0.05 से कम है, अत: शोधार्थिनी की शून्य परिकल्पना दो असत्य सिद्ध होती है एवं वैकल्पिक परिकल्पना दो स्वीकार होती है। इससे स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूह से जुडने के पश्चात् उत्तर दाताओं के व्यय में सकारात्मक परिवर्तन हुआ है।

X3 और Y3 चरों के मध्य 'टी टेस्ट' की गणना करने पर 'टी' का परिकल्पित मान 0.02804 है, जो 0.05 से कम है अत: शोधार्थिनी की शून्य परिकल्पना तीन असत्य सिद्ध होती है, एवं वैकल्पिक परिकल्पना तीन स्वीकार होती है, जिससे स्पष्ट होता है कि स्वयं सहायता समूह से जुडने के पश्चात् उत्तरदाताओं की बचत में सकारात्मक परिवर्तन हुआ है।

निष्कर्ष:

उपर्युक्त शोधकार्य से स्थापित होता है कि अध्ययन क्षेत्र में स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के पश्चात् महिलाओं की मासिक आय, मासिक व्यय और मासिक बचत में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जिसके कारण महिलाएं आर्थिक रूप से अधिक आत्मनिर्भर और सशक्त हुई है। शोधार्थिनी द्वारा यहाँ यह अनुशंसा की जाती है कि अध्ययन क्षेत्र में स्वयं सहायता समूह को अधिक शक्ति और संसाधन उपलब्ध कराए जाएं, जिससे इन स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से अध्ययन क्षेत्र में आदिवासी महिलाओं का सशक्तिकरण कर उन्हें आर्थिक विकास की मुख्यधारा से जोड़ा जा सके एवं उनके माध्यम से अध्ययन क्षेत्र का सामाजिक-आर्थिक विकास सुनिश्चित किया जा सके।

सन्दर्भ:

1. Choudhary, A. S. (2015). Economic Empowerment of Rural Women Entrepreneurs in Rajasthan through Self-help Group: A Case of SAKHI. Imperial Journal of Interdisciplinary Research (IJIR), 1.
2. Desai, R. M., & Joshi, S. (2014). Collective Action and Community Development: Evidence from Self-Help Groups in Rural India. The World Bank Economic Review, 28(3), 492–524.
3. Devi, G., & Jain, D. K. (2011). Economic Impact of Micro-Finance: A Comparative Study of Dairy Self-Help Groups (SHGs) in Jaipur District of Rajasthan. Indian Journal of Agricultural Economics, 66 (902-2016-66733).
4. Sekhon, S., & Grant, M. (2021). Patterns of loan use for women's self-help groups in rural Rajasthan. World Development Perspectives, 24, 100365.
5. Singh, A., Sharma, S. K., & Henry, C. (2010). Impact of Women Self Help Groups in changing Socio-Economic Status of Rural Families in Bikaner District of Rajasthan. *Raj. J. Extn. Edu. 17 & 18: 112*, *114*.